International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारतीय वर्ण व्यवस्था : एक ऐतिहासिक अध्ययन

मुकेश कुमार पासवान
;यू0 जी0 सी0 नेट
शोधार्थी ;इतिहास विभाग
भू0 ना0 मं0 वि0 वि0 मधेपुरा ;बिहार

सारांश :–

भारत के सामाजिक इतिहास में वर्णव्यवस्था का महत्वपूर्ण स्थान है जो सामाजिक विभाजन के रूप में वैदिक काल से आजतक संपूर्ण भारत में दिखाई देता है । वर्ण का प्रयोग रंग के कार्य में होता था और प्रतीत होता है कि आर्य भाषाभाषी गौर वर्ण के थे और मूलवासी लोग काले रंग के हो सकता है, सामाजिक वर्ग–विन्यास में रंग को परिचायक चिन्ह बनाया गया हो, लेकिन रंगभेददर्शी पश्चिमी लेखकों ने रंग की धरणा को बढ़ा–चढ़ा कर प्रस्तुत किया है । वास्तव में समाज में वर्गों के सृजन का सबसे बड़ा कारण हुआ प्राचीन वासियों पर आर्यों का आधिपत्य । आर्यों द्वारा जीते गए और दस्यु जनों के लोग दास ;गुलामद्ध और शूद्र हो गए ।

मूल शब्द :–

वृति, सर्वोत्कृष्ट, अंत्यज, विशिष्ट, अस्पृश्यता, कर्मकाण्ड, यज्ञोपवीत, श्रेष्ठिक, राज्याभिषेक भाण्डागारिक, द्रधेपार्जन धर्मोपदेश ।

प्रस्तावना :–

देश के विविध सांस्कृतिक और दार्शनिक आन्दोलन, राजनीतिक विजयों, आर्यीकरण की नीति और अनार्यों से संपर्क बढ़ने के कारण आर्यों की सामाजिक अवस्था में परिवर्त्तन हुए । ये परिवर्तन प्रचुर मात्राा में हुए ।)ग्वैदिक आर्य अब केवल कर्म के अनुसार वर्ण में विभक्त नहीं थे, बल्कि उनमें अनेक सामाजिक वर्ग उत्पन्न हो गये थे । यहाँ यह उल्लेखनीय है कि पूर्व वैदिक काल में वर्ण–व्यवस्था का संगठन पेशे के आधर पर हुआ था । जो लोग पठन–पाठन, धर्मिक व्यवस्था, कर्मकाण्ड तथा यज्ञानुष्ठान में दक्ष थे तथा दान ब्राह्मण करते थे वे ब्राह्मण कहे बाते थे । ब्राह्मण अपने यजमानों के लिए पूजा–पाठ तथा यज्ञ करते थे । वे कृषिकर्म से सम्बन्धित समारोहों का

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नियोजन भी करते थे । ये यु(में राजा की सपफलता की कामना करते थे । यु(तथा रण–कौशल में देश की रक्षा करने वाले क्षत्रिाण कहलाते थे । क्षत्रिाय भूमि के स्वामी होते थे और राजनीति में सक्रिय भाग लेते थे । वणिक, कृषक, पशुपालक और शिल्पी वैश्य कहलाते थे । इन तीन वर्णों की सेवा और अन्य शारीरिक श्रम करने वाले दास, दस्यू थे । इन्हें 'शूद्र कहा जाता था ।)ग्वैदिक काल में वर्ण एक आदर्शवादी सामाजिक व्यवस्था था और इसमें कभी कठोरता एवं रूढ़िवादिता नहीं आयी थी । सभी वर्णों के लोगों में पारस्परिक सम्बन्ध था और वैवाहिक सम्बन्ध भी होता था । एक वर्ण से दूसरे वर्ण में आना–जाना कुछ सीमा तक जारी था । ब्रहर्षि ध्वन ने क्षत्रिाय शर्याति की पुत्राी सुकन्या से विवाह किया था विदेह के राजा जनक, काशी के आजतशत्राु और पांचाल के प्रवाहण धावालि ने क्षत्रिाय हो हुए भी ब्रहाज्ञान में ख्याति अर्जित की थी । देवापि ने अपने भाई राजा शान्तनु के अश्वमेध–यज्ञ में प्रधन पुरोहित का कार्य किया था ।

लेकिन उत्तर वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था अध्कि जटिल हो गया । ब्रह्मणवर्ण और राजवंश में कई वर्ग बन गये । ब्राह्मण कई वर्गों में विभाजित हुए जैसे साधरण पुरोहित, राजपुरोहित, राजमंत्राी, शिक्षक, उपदेशक, आचार्य और)षि । इसी प्रकार शु(राजवंश, राजपुरूष शासक और सैनिक क्षत्रियों के भी कई उपवर्ग बन गये । इसी तरह खेती, व्यापार और दूसरे उद्योग–ध्न्धें के विस्तार से वैश्यों को अनेक वर्ग एक–दूसरे से अलग होते गये । शूद्रों में भी पारिवारिक दास, नौकर, मजदूर तथा हीन–व्यवसाय करने वाले अनेक वर्ग बन गये ।

ध्र्म की प्रधनता के कारण समाज में ब्राह्मणें की प्रतिष्ठा थी । वे अपने को श्रेष्ठ मानते थे । क्षत्रियों ने ब्राह्मणों की बढ़ती हुई शक्ति का विरोध किया । ब्राह्मणों और क्षत्रियों के बीच इस कारण लम्बे समय तक संघर्ष चलता रहा । शूद्रों की सामाजिक स्थिति दयनीय थी । ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार, क्षत्रिाय समाज का केन्द्र था । जिसके चारो ओर समाज की अन्य इकाइयाँ घूमती थीं । ब्राह्मण सोम पीनेवाला, दान ग्रहण करनेवाला और स्वतंत्राता से घूमनेवाला था । वैश्य सामज के पोषण का आधर था । शूद्रों का अपना व्यक्तित्व और स्वतंत्रा अस्तित्व नहीं था । उन्हें दूसरों का सेवक तथा दूसरों के आदेश पर काम करने वाला कहा गया है ।

वर्ण व्यवस्था का प्रारंभिक स्वरूप :–

आर्यों का प्रारंभिक सामाजिक वर्गीकरण वर्ण एवं कर्म के आधर पर हुआ था । आर्यों के तीन प्रमुख वर्ग थे – ब्राह्मण, क्षत्रिाय और वैश्य । यह वर्गीकरण जाति या जन्मजात न होकर कर्म के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आधर पर निश्चित किया गया था । ब्राह्मण एवं क्षत्रिय को राजन्य कहा जाता था । वैश्य के अंतर्गत सामान्य जन आते थे । इस समय अनार्यों को भी वैदिक समाज में शामिल किया जा रहा था । इन अनार्यों को वैदिक समाज का अंग मानते हुए भी रक्त की शु(ता के आधर पर नीचा दर्जा प्रदान किया गया । इस प्रकार सामज में चतुर्थ वर्ण का भी उदय हुआ ।)ग्वेद के दसवें मंडल ;जो बाद में जोड़ा गया माना जाता है द्ध में चार वर्णों की उत्पति की कथा की गई है । इसके अनुसार ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण, बाहु से क्षत्रिय, जांघ से वैश्य और पैर से शूद्र का जन्म हुआ । शूद्र की श्रेणी में अनार्यों को रखा गया, परंतु यह व्यवस्था वैदिक काल के अंतिम चरण में महत्वपूर्ण बन सकी । वर्ग विभाजन के बावजूद यह व्यवस्था कठोर नहीं थी । व्यवसाय खान–पान एवं विवाह इस समय तक वर्ण–व्यवस्था की कठोरता से बचे हुए थे ।)ग्वेद के एक उ(रण से स्पष्ट हो जाता है ''मैं कवि हूँ, मेरे पिता वैद्य हैं, मेरी माँ पत्थर की चक्की चलाती है । ध्न की कामना करने वाले नाना कर्मों वाले हम एक साथ रहते हैं ....।'' इसके बावजूद कबीलाई समाज में यो(ाओं एवं पुरोहितों को अध्कि सुविधएँ प्राप्त थी । यु(के लूट का बड़ा भाग कबीले के मुखिया और पुरोहित को ही मिलता था ।)ग्वैदिक समाज में दास अथवा दस्युओं का भी उल्लेख मिलता है । इन दासों की पहचान निश्चित नहीं है, यद्यपि आर्यों से इनके संघर्ष की चर्चा)ग्वेद में हुए हैं । अनेक पाश्चात्य इतिहासकारों की मान्यता है कि दास अथवा दस्यु ;अनार्यद्ध भारत के मूल निवासी थे, परंतु दास शब्द का व्यापक अर्थ लिया जाना चाहिए। आदिम जातियों के अतिरिक्त इस वर्ग में यु(बंदी और निम्न आर्यों को भी सम्मिलित किया जा सकता है, जैसे–यदु, तुर्वसु इत्यादि आर्यों को भी दास कहा गया है । दासों की तुलना में दस्युओं को आर्यों का प्रबल शत्रु बताया गया है । उन्हें अमानुष कहा गया है । पुरूष दासों का दान कम होता था, जबकि स्त्री–दासों के दान का उल्लेख अध्कि मिलता है । ध्नी वर्गों में संभवतः धरेलू दास रखने की प्रथा विद्यमान थी, परंतु आर्थिक उत्पादनों में दासों का उपयोग नहीं होता था ।

भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था :–

अलबरूनी भारतीय समाज की मुख्य विशेषता वर्णव्यवस्था का विस्तार से उल्लेख करता है । उसके अनुसार भारतीय समाज चार वर्णों में विभक्त था । सर्वोच्च जाति ;वर्णद्ध ब्राह्मणों की थी । उनका जन्म ब्रह्मा के सिर से हुआ था । हिन्दू उन्हें मानव जाति में सर्वोत्कृष्ट मानते हैं । क्षत्रियों की उत्पत्ति ब्रह्मा के कंध्े और बाहु से हुई थी । उनकी स्थिति ब्राह्मणों से बहुत अध्कि नीचे नहीं थी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

। वैश्यों की उत्पत्ति ब्रह्मा के जंध से तथा शूद्रों की ब्रह्मा के पैर से हुई थी । वैश्यों और शूद्रों में विभेद अध्कि नहीं था । दोनों गाँवों और शहरों, घरों और सरायें में एक साथ रहते थे ।

चार वर्णों के अतिरिक्त अलबेरूनी अंत्यजों का भी उल्लेख करता है । उनकी स्थिति शूद्रों से नीचे थी । वे विभिन्न प्रकार के कार्यों और व्यवसायों में संलग्न थे । उनकी गणना किसी वर्ण या जाति में नहीं होती थी । अंत्यजों की आठ श्रेणियों का उल्लेख अलबेरूनी करता है । इनमें जूता बनाने वाले ;चर्मकारद्ध और वस्त्रा बुनने वाले ;जुलाहाद्ध के अतिरिक्त अन्य लोगों में ;टोकरी बुनने वाले, बाजीगर, मछुआरे, शिकारी इत्यादीद्ध वैवाहिक संबंध् होते थे । चार वर्णों के लोग इनके साथ नहीं रहते थे । अंत्यजों को नगरों और गाँवों के बाहर रहना पड़ता था । हादी, डोम, चंडाल और बड़हातू की गणना किसी जाति या व्यवसायिक संघ में नहीं होती थी । उन्हें एक लग वर्ग माना गया था । उन्हें सामान्यतः शूद्र पिता और ब्राह्मणी माता का अवैध् संतान माना जाता था । उन्हें गंदा काम करना पड़ता था, जैसे गाँव की सपफाई इत्यादि ।

सभी वर्ग के लोगों का नामकरण उनके विशिष्ट व्यवसाय के आधर पर होता था । ब्राह्मणों के अनेक वर्ग थे, जैसे इशीन, अग्निहोत्राी, दीक्षित इत्यादि । हादी गंदे कार्य से परहेज करते थे । डोम बांसुरी बजाते थे और गाना गाते थे । नीची जाति के कुछ लोग हत्या और न्यायिक दंड देने का काम करते थे । नीची जातियों में निम्नतम श्रेणी बड़हातू की थी जो मृत जानवरों कुत्तों और अन्य जानवरों का मांस खाते थे ।

हिंदू समाज के चारों वर्णों के लोग एक साथ खाना खाते समय अपना अलग समूह बना लेते थे । हिन्दू बचा हुआ भोजन नहीं करते थे । हिन्दुओं में इस बात पर पर्याप्त मतभेद था कि मोझ प्राप्ति का अध्किार किस वर्ग को था । कुछ लोगों का मानना था कि सिपर्फ ब्राह्मण और क्षत्रिाय ही मोझ पाने के योग्य है, कुछ अन्य लोग चारों वर्णों को मोझ पाने का अध्किारी मानते थे ।

ब्राह्मणों की सामान्य स्थिति :–

अलबेरूनी के अनुसार ब्राह्मणों के लिए निश्चित आदर्श थे जिनका पालन करना उनके लिए आवश्यक था । उनके मुख्य कर्तव्य दया दिखाना, दान लेना तथा अध्ययन–अध्यापन एवं यज्ञ करना था । ब्राह्मण प्रतिदिन तीन बार स्नान करते थे तथा सूर्य की ओर मुँह कर और हाथ जोड़कर उपासना करते थे । सभी शुभ कार्य पूर्व दिशा की ओर होकर किए जाते थे, सिपर्फ अशुभ कार्य ही

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दक्षिणाभिमुख होकर किए जाते थे । ब्राह्मण प्रतिदिन सिपर्फ दो बार भोजन करते थे । ;दोपहर और संध्या समयद्ध । भोजन पूर्व अपने भोजन का कुछ अंश वे अतिथियों और पशु—पक्षियों के लिए अलग कर देते थे । ब्राह्मणों के लिए अपना जल—पात्रा अलग रखना आवश्यक था । उनके लिए उत्तर में सिंध्ु नदी से दक्षिण में चमर्णवती नदी के मध्य निवास करना आवश्यक था । इन नदियों को पार कर तुर्कों के प्रदेश में प्रवेश उनके लिए वर्जित था । इसी प्रकार ब्राह्मणों के लिए पूर्वी और पश्चिमी समुद्रों के मध्य के प्रदेश में रहना आवश्यक था। ब्राह्मणों के लिए पाँच प्रकार की सब्जियों– लहसुन, प्याज, कद्दू, क्रंच और नली का सेवन प्रतिबंध्ति था ।

क्षत्रियों की स्थिति :–

हिन्दू समाज में क्षत्रियों को भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था । अलबेरूनी क्षत्रियों का तो उल्लेख करता है, परंतु राजपुतों का उल्लेख नहीं करता है जो 11वीं शताब्दी में महत्वपूर्ण राजनीतिक शकित थे । संभवतः राजपूतों को वह क्षत्रिय की श्रेणी में ही रखता है । ब्राह्मणों के समान क्षत्रिय भी वेद पाठ करते थे तथा पुरानों में वर्णित नियमों का पालन करते थे तथा एक धगे का यज्ञोपवीत धरण करते थे ।

वैश्यों और अन्य वर्णों की स्थिति :–

वैश्यों का मुख्य कार्य कृषि, पशुपालन एवं ब्राह्मणों की आवश्यकताओं की पूर्ति करना था । वैश्य भी दो धगों का बना यज्ञोपवीत धरण करते थे । शूद्र की स्थिति ब्राह्मणों के सेवकों के समान थी । शूद्र यज्ञोपवीत के रूप में मलमल वस्त्रा धरण करते थे । शूद्रों को प्रार्थना करना, वेद का पाठ करना तथा अग्नि को आहुति देने का अध्किार नहीं था । शूद्र और वैश्य अगर वेद का उच्चारण करते थे तो राजा की आज्ञा से उनकी जीभ काट ली जाती थी लेकिन इन दोनों वर्णों के लोग तपस्या कर सकते थे, धर्म का काम कर सकते थे तथा ब्राह्मणों को दान दे सकते थे । प्रत्येक वर्ण के लिए निश्चित व्यवसाय से बाहर का काम करना पाप या अपराध् माना जाता था । सभी गैर–हिन्दुओं को ;चांडालों के अतिरिक्तद्ध मलेच्छ माना जाता था ।

विभिन्न वर्णो के कार्य :–

वैदिक काल में पुरोहितों का राजनीतिक, सामाजिक एवं धर्मिक क्षेत्रों में अत्यध्कि महत्व था । रामायण से स्पष्ट होता है कि पुरोहित वर्गों का काशी और कौशल जैसे विशाल राज्यों में बड़ा मान

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

था परन्तु धीरे–धीरे वस्तुस्थिति में परिवर्तन के कारण कुरू, पांचायल तथा मत्स्य राज्यों में पुरोहित की अपेक्षा सेनापति को अधिकाधिक सम्मान प्रदान किया जाने लगा था । पुराणों से प्रतीत होता है कि कभी–कभी कई राज्यों के लिये एक ही पुरोहित होता था । पुरोहित वर्ग अब असंगठित हो चुका था और उसमें पर्याप्त मतभेद भी उत्पन्न हो चुके थे । ये लोग राज्याश्रम पर निर्भर रहते थे अतएव वैदिक काल की भाँति राजा पर इस वर्गों का कोई विशेष प्रभाव नहीं रह गया था और उनमें राजा का विरोध करने की क्षमता भी नहीं थी ।

महाकाव्यों के अर्न्तगत विभिन्न वर्गों के कार्य इस प्रकार थे : क्षत्रियों का कार्य जनता की रक्षा रकना, ब्राह्मण का विक्षाटन, वैश्य का पशुपालन, कृषि प्रथा द्रव्योपार्जन एवं दास का कार्य श्रम करना । इस युग के शूद्र लोग प्रायः व्यापारियों और कृषकों के यहाँ दास की भाँति कार्य करते थे । ये लोग यु(में भी शिविर ठतयादि ढ़ोने तथा अन्य प्रकार की सहायता के कार्यों में नियुक्त किये जाते थे । इस युग में भी इतना कठोर जाति बन्धन नहीं था कि कोई दास अथवा शूद्र उन्नत कर्म करके भी उच्च जाति में न आ सकता हो । ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं कि शूद्रों ने ब्राह्मणों तथा क्षत्रियों के धर्मों का पालन ख्यातिपूर्वक किया । एकलव्य शूद्र होते हुए भी धनुर्विधा में निपुर्ण हुआ । इस प्रकार इस समय के कतिपय अन्य शूद्रों ने विद्याध्ययन करके धर्मोपदेश भी दिये थे । विदुर और मतंग शूद्र थे किन्तु वे अपने प्रगाढ़ पंडित्य के कारण ब्राह्मणों के समान प्रतिष्ठित थे ।

वर्ण व्यवस्था का दुष्परिणाम :–

इन वर्णों में मतभेद बढ़ता जा रहा था । उनके अपने आचार–विचार थे । उनकी वृति, नियम अनियम, खत्म हो गयी । आदर्शवादी वर्ण व्यवस्था जाति प्रथा की शिकार हुई । एक जाति को छोड़कर लोग दूसरी जाति में नहीं जा सकते थे । जाति प्रथा के नियम कठोर होते गये । ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों के बीच पारस्परिक आदान–प्रदान बन्द हो गया । जैसे–जैसे प्रादेशिक विशेषताएँ और ब्राह्मणों की सत्ता बढ़ती गयी वैसे–वैसे वर्ण व्यवस्था की कठोरता भी बढ़ती गयी । विभिन्न वर्णों का पारस्परिक आना–जाना अश्र(ा की दृष्टि से देखा जाने लगा । अनुलोम और प्रतिलोम विवादों से उत्पन्न सन्तानों को वर्णसंकर माना जाने लगा और उनके अपने वर्ग बन गये । नयी और विविध वृत्तियों के कारण यह परम्परा अनवरत चलती रही । पफलस्वरूप समाज अनेक वर्णों का संगठन बन गया जिसमें प्रत्येक वर्ग अपने स्वत्रांत विधनों से व्यवस्थि था ।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उत्तर वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था की जटिलता की प्रवृति का केवल आरम्भ हुआ था । अभी वर्ण व्यवस्था जाति–पाँति की संकीर्णता में पूरी तरह बंधी नहीं थी । इस युग में राज्याभिषेक से सम्बन्धित ऐसे कई सार्वजनिक अनुष्ठान थे जिनमें शूद्र भाग लेते थे । इसी तरह समाज में शिल्पियों जैसे रथकारों की ऊँचा स्थान दिया जाता था । रथकारों को उपनयन संस्कार के अधिकारियों की सूची में सम्मिलित किया गया था । इससे स्पष्ट होता है कि उत्तर वैदिक काल में वर्णभेद की दिशा में बहुत अधिक प्रगति नहीं हुई थी ।

महाकाव्य युग में समस्त राजसत्त क्षत्रियों के हाथ केन्द्रित हो चुकी थी और वे अपने को ब्राह्मणों की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ समझते थे । राजनीति में ब्राह्मणों का प्रभुत्व कम होता जा रहा था । और कई वर्गों में विभक्त हो जाने के पफलस्वरूप वे परस्पर संघर्ष किया करते थे । द्रोणाचार्य ब्राह्मण होते हुए भी क्षत्रियों का कार्य करते थे । इस युग में व्यापारी वर्ग अपनी भिन्न–भिन्न श्रेणियों में संगठित हो चुका था । प्रधन दस्तकारी के लोगों ने अपने को अट्ठारह श्रेणियों में विभक्त कर रखा था और इसमें से प्रत्येक श्रेणी का प्रमुख ज्येष्ठक, महाश्रेष्ठिक, अनुश्रेष्ठिक अथवा श्रेष्ठिक कहलाता था । सभी श्रेणियों का सम्मिलित रूप में उत्तरदायित्व पालन करने वाला भण्डागार कहलाता था । इस संगठन के पफलस्वरूप राजनीति में व्यापारी वर्ग का महत्व भी वैश्य जाति के अन्तर्गत माना जाता था । कृषक और व्यापारी दोनों ही आर्य जाति के थे, किन्तु कृषकों का व्यापारियों की भाँति संगठन नहीं था और ये ग्रामीण जीवन व्यतीत करते थे, जबकि व्यापारी अधिकतर नगरों में रहते थे । सबसे निम्न श्रेणी में दास वर्ग के लोग थे । दास उच्च वगों की सेवा में रहकर श्रमिकों जैसा जीवन व्यतीत करते थे ।

निष्कर्ष :–

वर्णव्यवस्था एवं जातिप्रथा पर आधरित संपूर्ण भारतीय समाज विभिन्न जातियों और वर्णों में विभक्त था, अस्पृश्यता की भावना एवं उच्चवर्णवालों द्वारा निम्न वर्ग के शोषण की प्रक्रिया ने भारतीय समाज को अंदर से खोखला कर दिया था । जातिगत, वंशगत और राजनीतिक श्रेष्ठता के कारण अहंकारी, झगड़ालू और जिद्दी प्रवृति ने दुर्बल बना दिया । पुरातन वर्ण व्यवस्था समाज की जटिलता तथा कट्रता को जन्म दिया । जाति–व्यवस्था के कारण समाज में असमानता बढ़ रही थी और बहुसंख्यक लोग अधिकारविहीन हो गये थे । वर्ण–व्यवस्था एवं जाति व्यवस्था के नियमों के लिए कठोर दण्ड की व्यवस्था थी । चतुवर्ण–व्यवस्था अपनी अपरिवर्तनशीलता के कारण अव्यवहारिक हो

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गयी थी । समाज में उच्च वर्णों के अत्याचार बढ़ रहे थे । धार्मिक आन्दोलन ने वर्ण पर आधारित जाति व्यवस्था का विरोध किया और समाज की कृप्रथाओं, उसकी स्थिरता, गतिहीनता, असमानता और अन्याय का विरोध किया तथा जाति प्रथा का उन्मूलन कर समाज को समानता के आधर पर संगठित करने का प्रयास किया ।

हर काल में भेभाव मूलक जाति व्यवस्था का विरोध हुआ है । सबसे पहले आचार्य चारीक ने इसका विरोध किया । महात्मा बु(इसके विरू(असरकारक अभियान चलाया । संत कबीर ने इसके खिलापफ आवाज उठाई । गुरू नानक देव ने इस जातिवादी व्यवस्था से दुखी होकर अलग वंश चलाया । स्वामी विवेकानन्द, महात्मा ज्योतिवा पफूले आदि ने इसकी कट्रता पर प्रहार किये। लेकिन जाति प्रथा के बारे में बिल्ली के नौ जीवन वाली कहानी चरितार्थ है जो अनेकों विरोध को झेलते हुए आज तक जीवित बनी हुई है । अंक्रीजों द्वारा बनाये गये कानून, जनशिक्षा व आधुनिक विचारधरा का प्रसार रेल, समाचार पत्रा आदि का प्रचलन व आधुनिक समय में औधोगीकरण व शहरीकरण आदि के कारण जाति बंध्न के हिसाब से भेदभाव कुछ हद तक कम हो गये है । देश की सवतंत्राता आन्दोलन के अमर सैनानी महात्मा गाँधे, राष्ट्रनायक जवाहरलाल नेहरू, डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, राममनोहर लोहिया तथा सरदार पटेल आदि राष्ट्रीय नेताओं द्वारा सभी वर्गों एवं जातियों की भागीदारी व राष्ट्रीयता की भावना से जातिवाद की प्रखरता में कमी आई । महात्मा गांधे द्वारा चलाये गये अछूतोंद्वार के कार्यक्रम एवं डॉ0 अम्बेडकर द्वारा उनके अध्किरों के लिए लड़ी गई लड़ाई ने छोटी जातियों में जागृति पैदा की तथा इस संबंध में छुआछुत मिटाने व भेदभाव समाप्त करने हेतु आवश्यक कानून भी बनाये गये हैं।

स्वतंत्राता के बाद व्यस्क मताध्किार प(ति ने जाति प्रथा को सबसे जबरदस्त चुनौती दी है । व्यस्क मताध्किार पर आधरित राजनैतिक प्रणाली में जाति की भूमिका महत्वपूर्ण बन गई है और वर्तमान राजनीति के कारण निम्न जातियो के लोग उच्च व सम्मानजनक स्थान पाने में लगे हैं जिसे कि वे धर्मिक लव सामाजिक माध्यमों के जरिये प्राप्त नहीं कर सकते थे । अतः उच्च तथा निम्न जातियों के मध्य समानता में कुछ समायोजन हुआ है । परन्तु जातिवाद दूसरे रूप में उभरा है । तात्पर्य यह है कि इस भेदभावपूर्ण वर्ण जाति व्यवस्था को हजारों वर्षों की यात्राा से निम्न वर्ग की जातियों को न केवल निम्न या छोटी जाति समझी गई, बल्कि वे शैक्षणिक, आर्थिक तथा राजनैतिक

दृष्टि से भी पिछड़ी बनी रही । आधुनिक काल में इन जाति व्यवस्था में कुछ सुधर हुई है परन्तु इस क्षेत्रा में कार्य करने की आवश्यकता है ।

सन्दर्भ सूची :–

01. आर.एस.शर्मा, शोसल चेंज इन अर्ली मेडिवल इंडिया ;सर्का एडी 500–1200द्ध
02. आर.एस.शर्मा, शूद्राज इन संशिएट इंडिया, परिशिष्ट–2
03. पाणिनि, टप् 2ण्62ण्
04. अर्थशास्त्रा, प्प 4ण्
05. आर.एस.शर्मा, शूद्राज इन संशिएट इंडिया, पृ0 167–78
06. जटाशंकर प्रसार मिश्र, अलबेरूनी के भारत का राजनीतिक और सामाजिक अध्ययन, काशी हिन्दू वि0 वि0 वाराणसी, 1963
07. आर भूषण, एंसिएंट इंडियन हिस्ट्री, श्री पबिल्शंस एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली–2010
08. के.एल. चंचरीक दलितस् इन एंसियंट एण्ड मेडिवल इंडिया, श्री एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2010
09. एस. गुप्ता, भारत में जाति व्यवस्था, सूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली–2011
10. रश्मि पाठक, प्राचीन भारत का समााजिक इतिहास, अर्जून पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली 2012
11. देव प्रकाशन, जातिगत सामाजशास्त्रा, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2017
12. के.सी. जैन, प्राचीन भारत का इतिहास : 650 ई0 में से 1200 ई0 तक : यूनिवर्सिटी पब्लिकेश्न, नई दिल्ली, 2012
13. के. एल. चंचरीक, भारतीय दलित जाति कोश, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2012.